**तीसरा दिन : बुधवार , ४ अक्टूबर**

***विजय लक्ष्मी*** **- मुक्ति व विजय के पथ पर ले जाने वाली |**

**स्मृति:** विजय लक्ष्मी सर्व शक्तियों का स्वरुप है और यह सूक्ष्म क्षमताओं को बढ़ाकर सफलता दिलाने वाली दाता का भी रूप है । ये ऐसी भगवती है जो मुक्ति चाहने वालों को सत्य मार्ग दिखाकर उन्हें विजय का अनुभव कराती है ।

**अभ्यास:** मैं विजयी आत्मा हूँ । बाबा ने मेरे मस्तक पर विजय का तिलक लगाया है । ज्ञान व योग की शक्ति से मैं माया के ऊपर विजय पा रही हूँ । अपने विजयी स्वरुप से मैं आत्माओं को माया पर विजय पाने की प्रेरणा दे रही हूँ ।

**चौथा दिन : गुरुवार , ५ अक्टूबर**

***सन्तना लक्ष्मी*** **- मनुष्य आत्माओं को महान व श्रेष्ठ संतान समझ गुणों का दान करने वाली |**

**स्मृति:** सन्तना लक्ष्मी बेटा ,बेटी व नाती-पोते के स्वरुप को धारण कर मानव मूल्यों को सँभालने वाली है।
संतान- भगवान की बड़े ते बड़ी गिफ्ट है जिसे श्रेष्ठ मूल्यों द्वारा अच्छा स्वास्थ व लम्बी आयु देकर संभाल करनी होती है ।

**अभ्यास:** मैं मास्टर ब्रह्मा व मास्टर क्रिएटर हूँ । मैं निमित्त बन आत्माओं को परमात्मा ज्ञान देकर उनके आतंरिक मूल्य व दिव्यता को जागृत कर रही हूँ । इससे आत्माओं के अंदर छिपे हुए पवित्रता व प्रेम के गुण इमर्ज हो रहे हैं । इस जागृती से आत्माएं अपने वास्तविक स्वरुप का अनुभव कर रही हैं।